IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882
INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

स्वतंत्र काल मे बिहार के नैतिक एवं अध्यातमिक विकास में अनुग्रह नारायण सिंह की भूमिका।

कुमार गौरव

शोध छात्र

विश्वविधालय राजनिति विज्ञान विभाग

बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविधालय, मुजफ्फरपुर

अनुग्रह नारायण सिंह के अनुसार लोकतंत्र की सफलता के लिए लोगों में नैतिकता की भावना का विकास व अच्छे आचार–विचार आवश्यक है। अतः राजनैतिक क्रान्ति, जिसके सात आयाम हैं, उसमें आध्यात्मिकता का विशेष महत्व है।

नैतिक आध्यात्मिक विकास–: अनुग्रह नारायण सिंह की आध्यात्मिक क्रान्ति इस लोक व परलोक से नहीं जुड़ी है वरन् वह धरती के मानव जीवन से सीधी जुड़ी है।

अनुग्रह नारायण सिंह के अनुसार मनुष्य एक पार्थिव अथवा स्थूल पदार्थ भी है व चैतन्य भी । जीवन में उसे भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही आवश्यकताएँ पूरी करनी चाहिए। भोजन , वस्त्र व निवास ऐसी भौतिक आवश्यकाएँ है जिनकी पूर्ति होनी चाहिए। भोजन पर्याप्त, सादा पोषक और स्वादिष्ट होना चाहिए किन्तु उसमें अतिरेक न हो । वस्त्र केवल उपयोगिता पूरी करने लायक नहीं बल्कि कोमल व सभी ऋतुओं में शरीर की रक्षा करने की पुष्टि से पर्याप्त होना चाहिए किन्तु आवश्यकता से अधिक वस्त्र नहीं होना चाहिए।

मकान छोटे होने चाहिए, परन्तु मानव–निवास के योग्य, स्वच्छ, हवादार, सूर्य की रोशनी से परिपूर्ण होने चाहिए किन्तु तड़क–भड़क वाले पावन नहीं होनें चाहिए। जीवन के रहन–सहन में वैभव व विलास को बढ़ावा नहीं देना चाहिए।

दूसरी भौतिक आवश्यकताओं को विषय में भी अनुग्रह नारायण सिंह का यही विचार था कि उपभोग को स्वेच्छा से सीमित करना चाहिए। उनके अनुसार यह एक नैतिक विचार है। अनुग्रह नारायण सिंह के यह विचार आध्यात्मिक जीवन के साधक के मार्ग से अलग है। साधारण मनुष्यों के लिए तो पूर्ण भौतिक आवश्यकता की पूर्ति (संतुष्टि) आध्यात्मिक जीवन है। तृष्णा, बहुल्य, ससम्पत्ति–संग्रह के दूषित साधन– ये सभी आध्यात्म विरोधी तत्व हैं।

नैतिक– आध्यात्मिक के साथ–साथ आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितिक एवं प्राकृतिक कारण मानव जीवन के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

विकास के संदर्भ में अनुग्रह नारायण सिंह का मत है कि जो लोग हाशियें पर खड़े है, दीन हैं, दुःखी हैं, बेघर है व बेरोजगार हैं हमें उनकी चिन्ता करनी चाहिए। यही समाज के यथार्थ जीवन के आध्यातिमकता है। इसके लिए वे कमजोर वर्ग के लोगों को अपने अधिकारों के लिए संगठित करने पर विशेष बल देते हैं। उनका यह आन्दोलन सामाजिक न्याय की स्थापना करने के लिए है।

इस प्रकार अध्यात्मिक विकास के अध्ययन से विविदत होता है कि अनुग्रह नारायण सिंह की क्रान्ति का सम्बन्ध मात्र सांस्कृतिक विषयों में परिवर्तन से नहीं है बल्कि इसका सम्बन्ध जीवन के एक –एक क्षेत्र जैसे– राजनैतिक, सामाजिक , धार्मिक, सांस्कृतिक , आर्थिक , वेचारिक व नैतिक में भी क्रान्ति से है।इस प्रकार व्यक्ति का समाज के जीवन में एक सर्वागीण परिवर्तन लाना है, नया भारत, नये समाज की स्थापना करना है। सम्पूर्ण क्रान्ति के द्वारा वास्तव में सच्चा स्वराज्य लाना है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में भारत के आध्यात्म का रंग चढ़ाने वाली क्रान्ति करनी है।

इस प्रकार अनुग्रह नारायण सिंह मात्र एक आधुनिक नेता ही नहीं थे, बल्कि उनमें बुद्ध, गांधी, विनोबा के गुणों को एकत्र करने की अनोखी संगम की धारा थी।

अनुग्रह नारायण सिंह के अध्यात्मिक विकास के सन्दर्भ में आलोचकों का कहना है कि यह सर्वोत्तम से पलायन है और सम्पूर्ण क्रान्ति में ग्राम स्वराज्य को स्वीकार नहीं किया गया है। किन्तु अनुग्रह नारायण सिंह ने जिस व्यवस्था के स्वरूप को अपना लक्ष्य बनाकर सर्वोदय को स्वीकार किया था, अध्यात्मिक विकास भी उसी व्यवस्था के स्वरूप को का प्रतिबिम्ब है, बल्कि सर्वोदय से भी उन्नत माध्यम है। अनुग्रह नारायण सिंह का विचार था कि अध्यात्मिक विकास को भी वाद में नहीं बांधा जा सकता। अध्यात्मिक विकास से ही आएगी। एक दिन में और किसी एक वाद को स्वीकार कर सम्पूर्ण क्रान्ति नहीं आ सकती। इसे प्राप्त करने के लिए सोपान–दर–सोपान आगे बढ़ना होगा।

भारत में अनुग्रह नारायण सिंह का यह सर्वागीण परिवर्तन लाने का प्रयास सफल ने हो सका क्योंकि इस क्रान्ति की सबसे बड़ी कमी यह थी कि यह एक अत्यन्त लम्बी व निरन्तर चलने वाली क्रान्ति थी, जो बहुत सफल न हो सकी, क्योंकि कोई भी क्रान्ति बहुत लम्बे समय तक नहीं चलती। अतः यह आन्दोलन जिन उद्देश्यों को लेकर शुरू किया गया था रूथ–जातिवाद की भवना का अन्त , अमीर व गरीब के भेद को मिटाना, भ्रष्टाचार उन्मूलन, सत्ता जनता के हाथों में सौंपना ताकि व्यक्ति का शिक्षा के माध्यम से नैतिक, बौद्धिक व सर्वागीण विकास करना आदि उद्देश्य प्राप्त नहीं किये जा सके। आज भ्रष्टाचार हमारो जनतंत्र के हर तन्त्र में जड़े जमाये बैठा है। अतः आज सम्पूर्ण क्रान्ति पहले से ज्यादा प्रासंगिक हो गयी है। समाज परिवर्तन का कार्य मात्र राज्य शक्ति से सम्भव नहीं है। इसके लिए समाज के प्रत्येक व्यक्ति को जागरूक होना होगा, अपने अधिकारों के साथ–साथ दूसरों के प्रति अपने कर्तवयों को भी स्वीकार करना होगा साथ ही मानवतावादी मूल्यों में स्वयं को ढालना होगा तभी सामाजिक संरचना में व्यापक परिवर्तन की हम अपेक्षा कर सकते है।

संदर्भ–सूची :–

.1. अनुग्रह नारायण सिंह : माई टोटल रिवोल्यूशन, एवरी मेंस, दि–22 पृष्ठ 74

2. अनुग्रह नारायण सिंहः राजनैतिक क्रान्ति के लिए आहवान, पृष्ठ–41

3. वी0एन0 सिंहः भारतीय सामाजिक चिन्तन, पृष्ठ–316

4. अनुग्रह नारायण सिंह उद्धष्त, अनुग्रह नारायण सिंह पृष्ठ–103

5. पूर्वोक्त पृष्ठ–585

6. लोक दृष्टि में जय प्रकाश, में उद्धष्त , पृष्ठ–85

7. अनुग्रह नारायण सिंह हमारी नजरों मे'' द रेडिकल ह्सूमेनिस्ट, मार्च, 1978, पृष्ठ–10

8. अनुग्रह नारायण सिंह, लोक–स्वराज्य, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) जुलाई, 1999, पृष्ठ–10

9. अनुग्रह नारायण सिंह, राजनैतिक क्रान्ति, (सर्व सेवा संघ, वाराणसी) सितम्बर, 1999